ज्ञान-

उत्तमता व महत्व

शव्वाल के मास में क्यों के धार्मिक संस्था व मदरसों के नय शैक्षिक वर्ष का प्रारंभ होता है।

शिक्षा हर बुलंदी का सोपान तथा हर प्रगति का माध्यम है। हर अवधि में वही समुदाय तथा वही जमात सफल रही जिस ने अपने को शिक्षा से संबोधित रखा।

वास्तव में ज़ाहिरी उन्नति तथा बातिनी प्रगति ज्ञान ही से संबंधित है। शिक्षा से खूद ज्ञन प्राप्त करने वाला उन्नति करता है तथा समाज के लिए विकास की राहें खुलती हैं।

शिक्षा के द्वारा मानव प्रगति व विकास कि मंज़िलें तय करता हुआ सर्वोत्तम नक्षत्र पर पहुंचता है शिक्षा के द्वारा हर क्षेत्र में प्रशंसा करता है वायुयान व बाण हवाई की ज़ाहिरी स्तर (उँचाई) भी शिक्षा के बिना नहीं हो सकती तथा रुहानी व सच्ची स्तर के लिए भी शिक्षा अवश्य है।

शिक्षा पैगम्बरों की विरासत तथा इन का सन्देश है। शिक्षा एक ऐसी क्रान्ति है जिस के द्वारा सदस्य व समुदाय का भाग्य संवरता है। शिक्षा के कारण से शिष्टाचार व सामाजिक विकास का अस्तित्व है।

www.Ziaislamic.com

इस के द्वारा स्थिति प्रसन्न होती है। भावना व अनुभूति पवित्र होते हैं था स्वभाव निश्चल होता है। उसी के प्रभाव से राक्षसी शक्तियां, शैतानी प्रतिभा तथा शैतानी सोंच-विचार निवारण व अंत होते हैं।

इसलाम धर्म ने धार्मिक तथा सांसारिक सर्व प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने कि यथासम्भव अनुदेश किया है। इसलाम ज्ञान कि राह में किसी एक स्थान पर रुक रहने कि आज्ञा नहीं देता बल्कि पल भर में अभिवृद्धि चाहने का आदेश देता है।

अर्थात अल्लाह तआ़ला ने ज्ञान में समाविष्ट उन्नति अधिक कि दुआ करने का आदेश दियाः-

भाषांतरः और आप कहे दिजीएः ऐ मेरे रब! मेरे ज्ञान में अभिवृद्धि प्रदान कर।

(सुरह ताहाः 20:114)

सर्वप्रथम वही ज्ञान को प्राप्त करने से संबंधित

इसलामी धर्म में शिक्षा को सर्वोत्तम महत्व का स्तर दिया गया है। सब से प्रथम वही ज्ञान प्राप्त करने से संबंदित प्रकट हुई, अल्लाह का आदेश हैः-

भाषांतरः पढीय अपने रब के नाम से जिस ने पैदा किया।

(सुरह अल-अलक़ः 96:01)

इस आयत पर ध्यान दिजीए! यहाँ पढने का तो आदेश है परन्तु कया पढा जाए इस का निश्चित रूप से वर्णन नहीं किया गया इसी प्रकार पैदा करने का तो वर्णन है किन्तु किस को पैदा किया इस प्रथम आयत में इस कि विस्तार नहीं फरमाई।

ना *इखरा* का तात्पर्य वर्णन है एवं ना *क़लखा* का तात्पर्य वर्णन। इस --- कलाम से इस सच्चाी कि ओर संकेत करना उद्देश्य है के अल्लाह तआ़ला ही *अरज़ व समा, शम्स, कोअकब व नजम*। सम्पूर्ण कायनात का पालनहार है।

अर्थात ज्ञान व इ़ल्म व विद्या अनुसंधान व अन्वेषण विषय भी कायनात कि प्रत्येक वस्तु को बनाया जाए गोया मानव को यह संकेत दे दिया गया के वह ज्ञान कि इच्छा व कामना के मार्ग में हर विषय पर निपुणता प्राप्त करने कि – लगातार करता रहे ताकि अल्लाह कि प्रज्ञान लाज़वाल से संबोधित हो सके। केवल वस्तु, प्रभाव में खो कर मालिक व रब से अज्ञात ना हो जाए।

क़ुरान करीम सीखने के उत्तमगुण

क़ुरान करीम वह पावन पुस्तक है जिसे अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के धन्य हृदय पर प्रकट फरमाया। जिस कि हर आयत तथा हर अक्षर कमें निर्माण के लिए विद्या व विवेक है।

इस मुबारक के हर अक्षर कि तिलावत पर 10 नेकियां (पुण्य) कि गवाही दी गई। अधिक सर्वश्रेष्ट व्यक्ति इस को घोषित दिया गया जो क़ुरान करीम सीखे तथा दुसरों को सिखाए, जैसा के सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 5027)

क़ुरान करीम सीखने तथा सिखाने कि बरकत केवल संसार कि हद तक सीमित नहीं बल्कि परलोक में भी बन्दा इस कि बरकत से धनी किया जाता है। क़ब्र में भी इस के साथ आदर व सम्मान का मामला किया जाता है। जैसा के हदीस पाक में समागत हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने मुझ से आदेश फरमायाः ऐ अबु हुरैरह! लोगों को क़ुरान सिखाते रहो तथा सीखते रहो, क्यों के इसी स्थिति में यदि तुम्हें मृत्यु आ जाए तो फरिश्ते तुम्हारी क़ब्र कि इस प्रकार ज़ियारत करेंगे जैसे कअ़बा शरीफ कि ज़ियारत की जाती है।

(जामअ़ उल हादीस, लिल सुयूती, मुसनद अबी हुरैरह, हदीस संख्याः 4265, कंज़ुल उ़म्माल, हदीस संख्याः 29377)

हाफिज़ क़ुरान कि विशिष्ठता

हाफिज़ क़ुरान के विशिष्ठता व प्रतिष्ठा में कई एक अहादीस शरीफ घोषित हैं 10 सदी हिज्री के मुहद्दिस जलील अ़लामा अ़ली मुतखी हिन्दी रहमतुल्लाहि अलैह ने अपनी नामवर पुस्तक "कंज़ुल उ़म्माल" में हाफिज़ क़ुरान कि विशिष्ठता से संबंधित मुतअ़दद हदीस व रिवायत अनुवाद किया हैः-

भाषांतरः क़ुरअ़ान का हाफिज़ इसलाम के झण्डे को उठाने वाला है तथा जिस व्यक्ति ने इस का सम्मान कि अवश्य इस ने अल्लाह तआ़ला का सम्मान किया तथा जिस ने इस को अपमान व अनादर की इस पर अल्लाह तआ़ला का कोप है।

(कंज़ुल उ़म्माल अलबाब अल साबअ़, हदीस संख्याः 2294)

अधिक मुसनद इ़माम अहमद में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अबदुल्लाह बिन उ़मर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से वर्णित करते है आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से कहा जाएगाः क़ुरान करीम पढता जा तथा दर्जा बादर्जा चढता जा तथा अनुक्रम के साथ तिलावत कर जिस प्रकार तो संसार में तिलावत करता था क्यों के तेरा स्थान अंत आयत के पास है जिस को तु पढेगा।

(मुसनद अहमदः 6508)

हदीस का ज्ञान प्राप्त करने कि श्रेष्ठता

क़ुरान करीम तथा हदीस शरीफ इसलाम के सिद्धांत कि नीव व स्तंभ है। क़ुरान करीम एक विशाल कानून तथा दस्तूर ईलाही है। जिस कि विस्तार, प्रकाशन हदीस के द्वारा मिलती है।

क़ुरान करीम में नमाज़ कि उत्पत्ति करने तथा ज़कात का समापन करने का आदेश है। रोज़ों कि फरज़ीयत का प्रदर्शन है। हज्ज का आदेश दिया गया है किन्तु स्पष्ट रूप से नमाज़ों कि संख्या व समय, रकातों का निर्धारित, ज़कात के निसाब कि संख्या, रोज़े के मुसतहबात व मुबाहात, मकरुहात व मफसुदात अधिक मनासिक (अनुच्छेद) हज्ज व उ़मरा वर्णन नहीं किए गए बल्कि यह सम्पूर्ण विस्तार अल्लाह तआ़ला ने हबीब अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के द्वारा फरमादीः-

www.Ziaislamic.com

आप सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के आदेश व लोकोक्ति कानून की प्रतिष्ठा रकते हैं। आप कि हर उक्ति व कर्म शरीअ़त का स्तर रख है।

हदीस पाक कि सेवा करने वालों के अधिकार में सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने विशेष रूप से दुआ़ फरमाई जैसा के सुनन इ़ब्म माजह में हदीस हैः-

भाषांतरः हज़रत अबदुर रहमान बिन अबदुल्लाह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, वह अपने पिता से वर्णित कते हैं के हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः अल्लाह तआ़ला खुश हाल रखे इस व्यक्ति को जो हमारी कोई हदीस सुने तथा इसे दुसरों तक पहुंचा दे।

(सुनन इ़ब्न माजह, हदीस संख्याः 238)

हदीस कि सेवा में व्यस्त रहने वाले सदस्य को यह विशेष कृपा प्राप्त है के सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इन्हें अपना खलिफा व उत्तराधिकारी घोषित दिया है जैसा के हदीस पाक में वर्णन हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अ़ली मुरतज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम हम प्रसिद्ध हुए तथा आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) ने 3 बार फरमायाः ऐ अल्लाह! मेरे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) उत्तराधिकारियों पर रहम कर! सहाबा किराम ने निवेदन कियाः या रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम! आप के उत्तराधिकारी व

खलीफा कौन हैं? सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मेरे उत्तराधिकारी वह हैं जो मेरे बाद आएंगे तथा मेरी (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) हदीस कि रिवायत करेंगे तथा लोगों को इस से रोशनास कराएंगे।

(कंज़ुल उ़म्माल, हदीस संख्याः 29488)

हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने 40 हदीस याद करने वाले व्यक्ति के लिए विशेष गवाही दान फरमाई है- जैसा के इ़माम जलाल उद्दीन सुयूती रहमतुल्लाहि अलैह ने रिवायत अनुवाद किया हैः-

भाषांतरः हज़रत सैयदना अबदुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मेरी उ़म्मत (समुदाय) का जो सदस्य मेरे (सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) आचरण व व्यवहार में से 40 हदीस याद करें तो क़यामत के दिन में इस कि शफआ़त (अनुनय) करने वाला तथा अल्लाह तआ़ला के दरबार में इस के ईमान कि गवाही देने वाला रहुँगा।

(जामअ़ अल हादीस लिल सुयूती, हुर्फ उल मीम, हदीस संख्याः 22048)

इसी प्रकार कि एक तथा रिवायत इ़माम बैहखी ने शुअ़बुल इ़मान में अनुवाद किया हैः-

भाषांतरः हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, आप ने फरमाया के हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः मेरी समुदाय के जिस व्यक्ति ने 40 हदीस याद की जो इन्हें इन के धर्म के मामले में लाभ देने वाली हों तो ऐसा व्यक्ति क़यामत के दिन

विद्वानों के साथ उठाया जाएगा। तथा विद्वान कि उत्तमगुण आबिद (इबादत करने वाले) पर 70 दर्जे अधिक है। अल्लाह तआला ही श्रेष्टतर जानता है के हर दर्जे के बीच कितनी बुलंदी है।

(शुअबुल ईमान लिल बैहखी, हदीस संख्याः 1684)

फिख का ज्ञान सीखने की शुभकामना

फिख का ज्ञान कोई नव ज्ञान नहीं है बल्कि कुरान व हदीस के सारांश तथा धर्म कि समझ बूझ का नाम है। इस कि हर मुसलमान को आवश्यकता है। अल्लाह तआला का आदेश हैः-

भाषांतरः चाहिए के वह धर्म में समझ बूझ प्राप्त करें।

(सुरह अत-तौबाः 09:122)

अल्लाह तआला फिख के ज्ञान कि सम्पत्ति से इन्हें बन्दों को नवाज़ता है जिन के साथ अल्लाह तआला विशेषत भलाई का विचार फरपिता है, जैसा के सहीह बुखारी में हदीस शरीफ हैः-

भाषांतरः सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अनुदेश फरमाया- अल्लाह तआला जिस व्यक्ति के साथ भलाई का उद्देश्य फरपिता है इसे धर्म में समझ बूझ प्रदान करता है, तथा इस के सिवा नहीं के मैं ही बांटने वाला हुँ तथा अल्लाह तआला दान करता है।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 71)

इमाम आज़म और ज्ञान प्राप्त करना कि इच्छा

आज ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें काफी सुविधाएं उपलब्ध हैं। पुस्तकें छपी हुई हैं। विद्यालय व शिक्षालय उपस्थित हैं। इस के विरुद्ध पूर्व सदियों में इतनी सुविधा तथा सरलता नहीं थीं।

ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक देश से दूसरे देश कि यात्रा की जाती थी। यदि किसी को मालूम हो जाता के फलां साहब के पास हदीस शरीफ है तो महीनों यात्रा कि कठिनाई को बर्दाश्त कर के इसे प्राप्त करते।

इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह 16 वर्ष कि उम्र में अपने प्रिय पिता के साथ हज्ज बैतुल्लाह के लिए गए। वहाँ आप ने एक सहाबी को देखा के वह हदीस शरीफ वर्णन फरमा रहे हैं। तो आप ने तुरंत अपने प्रिय पिता से निवेदन किया के आप को इन कि सेवा में पेश करें।

बहुतायत सभा होने के बावजूद इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह ज्ञान को प्राप्त करने तथा सहाबी जलील के चहरे मुबारक के दीदार के शौक में आगे बढे तथा इन कि सेवा में उपस्थित हो कर अनन्य रूप से हदीस शरीफ सुन्ने कि कृपा प्राप्त की जैसा के मुसनद अबु हनीफा में रिवायत हैः-

भाषांतरः इमाम अबु यूसुफ रहमतुल्लाहि अलैह से रिवायत है, आप ने फरमाया के मैं हज़रत इमाम आज़म अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह को फरमाते हुए सुनाः मैं ने सन 93 हिज्री में अपने प्रिया पिता के साथ हज्ज कि कृपा प्राप्त की एवं इस समय मेरी उमर 16 वर्ष थी। मैं ने कया देखा के बुज़ुर्ग व्यक्ति तशरीफ फरमा है। जिन के चारो-ओर लोग उपस्थित हैं। यह

देख कर मैं ने अपने प्रिय पिता से निवेदन किया के यह बुज़ुर्ग साहिब कौन हैं? इन्हों ने फरमायाः यह वह मोमिन पुरुष हैं जिन्हों ने हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआज़ला अलैहि वसल्लम कि संगत का आमोद पाया है। इन्हें "अबदुल्लाह बिन हारिस बिन जुज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु " कहा जाता है।

तो मैं ने अपने पिता से कहाः इन के पास कया चीज़ है? इन्हों ने फरमाया- इन के पास वह हदीस हैं जिन को इन्हों ने खूद सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से सुना है। तो मैं ने अपने पिता से निवेदन कियाः

मुझे इन कि सेवा में पेश किजीए ताकि मैं इन से कुछ सुनूं। तो वह आगे बढे तथा लोगों के बीच रास्ते बनाने लगे यहाँ तक के मैं इन से खरीब हो गया तथा मैं नमाज़ इन को फरमाते हुए सुनाः "हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अनुदेश फरमायाः जो व्यक्ति धर्म में समझ प्राप्त करे तो अल्लाह तआ़ला इस कि चिन्ता व कठिनाई को दूर कर देता है तथा इस को ऐसे स्थान से रिस्ख (संपोषण व जीविका) दान फरमाता है जहाँ से वह विचार भी नहीं करता है"। हज़रत अबु ज़मर रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः हज़रत मुहम्मद बिन सअ़द रहमतुल्लाहि अलैह जो इ़माम वाखरी के रचयिता हैं इन्हों ने वर्णन किया है के अवश्य इ़माम अबु हनीफा रहमतुल्लाहि अलैह ने हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु तथा हज़रत अबदुल्लाह बिन हारिसबिन जज़ज़ बैदी रहमतुल्लाहि अलैह को देखा है।

(मुसनद अबी हनीफा, हदीस संख्याः 01)

www.Ziaislamic.com

विस्तृत घोषणा ज्ञान कि महिमा पर

सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपने सर्वोत्तम लोकोक्ति के द्वारा असंख्य अवसर पर ज्ञान कि प्रतिष्ठा को उजागर फरमायाः एक रिवायत में आप ने ज्ञान के लगभग 35 लाभ वर्णन फरमाए हैं। आप का उच्च फरमाम यह हैः-

एवं सरकार पाक सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः ज्ञान व विद्या सीखा करो! क्यों के अल्लाह तआला कि सन्तुष्टी के लिए ज्ञान सीखना नेकी व पुण्य है। इस का प्राप्त करना इबादत है। आपस में ज्ञानी वार्तालाप करना अल्लाह तआला कि तसबीह करने के स्तर में है। ज्ञान में अनुसंधान करना जिहाद के बराबर पुण्य रखा है। अज्ञानी व्यक्ति को शिक्षा देना पुण्य व सदखा है, तथा ज्ञान को इस के लोगों पर खर्च करना अल्लाह से नज़दीका का माध्यम है क्यों के ज्ञान हलाल व हराम से अनुभव का तात्पर्य है। वह अहले जन्नत के द्वार का मीनार है। एवं ज्ञान तन्हाई व ध्वंस में सान्त्वनादाता व मित्र है, यात्रा में सर्वश्रेष्ट साथी है। तन्हाई में वार्तालाप करने वाला है, वह विपुलता व संपन्नता में मार्गदर्शन तथा निर्धनता में सहायक व उपकारक है। विरोधियों के विरुद्ध हथियार है तथा मित्रों के अधिकार में आभूषण है। ज्ञान के द्वारा अल्लाह तआला कुछ सदस्य को आरोहण व उच्च स्थान प्रदान करता है तथा इन्हें भलाई व कुशल के कार्यों में ऐसा नेता बनाता है के इन के पदचाप पर चला जाता है, इन के विधि को अपनाया जाता है। एवं इन की सुझाव को अंत निर्णय माना जाता है। फरिश्ते इन के शिष्टाचार को पसंद करते हैं तथा अपन परों को इन के लिए बिछाते हैं। प्रत्येक नमाज़ के अधिकार में मुक्ति कि प्रार्थना करते हैं। समंदर कि मछलियां व समुद्री जीव तथा पार्थिव जानवर के दरिंदे

www.Ziaislamic.com

इन के मुक्ति के लिए दुआ करते हैं। क्यों के ज्ञान अज्ञानता में रहने वालों के अधिकार में दिलों को जीवन प्रदान करने वाला है। अज्ञानता में रहने वालों के लिए प्रकाश का दीपक है। बन्दा ज्ञान कि आशीर्वाद से पुण्यात्मा के स्थान पर पहुंचता है तथा संसार व परलोक में बलुंद स्तर पर संबोधित हो जाता है तथा ज्ञान के भीतर ध्यान व विचार करना रोज़ा रखने के बराबर है।

आपस में बैठ कर पढना रात में उपासना करने के बराबर है, इसी के द्वारा नातों को जोडा जाता है। इसी के द्वारा हलाल व हराम को जाना जाता है, तथा वह कर्म कि ओर ले जाने वाले तथा इस के साथ रहने वाला है, वह धर्मनिष्ठ को दान किया जाता है तथा अभिशप्त को इस से वंचित रखा जाता है।

(नज़हातुल मजालिस व मुंतक़िब अल नफाईस, बाब फज़लुल इल्म व अहलह)

ज्ञान प्राप्त करने का लक्ष्य

मोमिन बन्दे का कर्म अल्लाह तआ़ला के दरबार में इसी समय स्वीकृत कि कृपा प्राप्त करता है जबके वह क्रम केवल अल्लाह तआ़ला कि सन्तुष्ठता के लिए प्रदर्शित किया गया हो।

क्यों के कर्मों उद्देश पर निर्भर है, जिस प्रकार नीयत होगी इस प्रकार पुण्य व सवाब मिलेगा, इसी प्रकार ज्ञान प्राप्त करने का यह उद्देश्य होना चाहिए के हम अल्लाह तआ़ला एवं इस के रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम कि सन्तुष्टी व प्रसन्नता के लिए ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं।

www.Ziaislamic.com

हम अपने ज्ञान के अनुसार कर्म करेंगे तथा इस ज्ञान को दूसरों तक पहुंचाएंगे सत्य के सन्देश को सार्वजनिक स्थल करेंगे। शिक्षित ढंग से असत्यता को समाप्त करने के लिए सम्पूर्ण कोशिश करेंगे।

धार्मिक ज्ञान हो के सांसारिक ज्ञान यह प्रत्येक से उद्देश्य निर्माण कि सेवा के साथ अल्लाह तआ़ला कि प्रज्ञानता है।

अल्लाह तआ़ला आदेश फरमाता हैः-

भाषांतरः फिर जान लो के अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूज्य-प्रभु नहीं।

(सुरह मुहम्मदः 47:19)

अधिक अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः ऐसा तो नहीं हुआ कि उनकी हर बडी गिरोह से एक छोटा गिरोह निकलता ताकि वह धर्म में समझ प्राप्त करते तथा ताकि वे अपन लोगों को डराते, जब वे उनकी ओर लौटते, ताकि वे (बुरे कर्मों से) डरने वाले हो जाते।

(सुरह अत तौबाः 09:122)

उपर्युक्त आयत के विस्तार में अ़ल्लामा आलूसी रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैः-

भाषांतरः अध्यापक का मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिए के ज्ञान के छात्र को बुद्धिमानी व अनुशासन का द्वार बलताए ग़लत विश्वास तथा ग़लत कर्मों से डराय तथा छात्र का सर्वश्रेष्ट लक्ष्य यह हो के हमेशा अल्लाह तआ़ला का भय

अपने हृदय में रखे, इस का उद्देश्य आनंद-मस्ती ना हो तथा ना गौरव का प्राप्त करना।

(रूहुल मआ़ने, सुरह अत-तौबाः 09:122)

ज्ञान प्राप्त का सर्वप्रम लक्ष्य यही होना चाहिए के मनुष्य दिल के सीपा में अल्लाह के खौफ व भय का मोती समोए हुए अल्लाह कि सन्तुष्टी कि इच्छा रखे। अल्लाह तआ़ला का आदेश हैः-

भाषांतरः निश्चय अल्लाह तआ़ला से इस के बन्दों में ज्ञानी ही डरते हैं।

(सुरह फातिरः 35:28)

ज्ञान प्राप्त करने वाला अने ज्ञान के द्वारा ना लोकप्रियता व सम्मान कि इच्छा करे एवं ना नाम व नामवी कि कामना, ना कोई कोई निंदनीय लक्ष्य रखे। हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने दुष्ट उद्देश्य के लिए ज्ञान प्राप्त करने से मना फरमाया। अर्थात जामे तिरमिज़ी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत कअ़ब बिन मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है इन्हों ने फरमाया मैं ने हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को अनुदेश करते हुए सुनाः जिस व्यक्ति ने इस उद्देश्य से ज्ञान कि इच्छा कि के उस के द्वारा विद्वानों का सामना करे या अनपढों के साथ झगडा करे या या अपने ज्ञान के द्वारा लोगों को अपनी ओर आकर्षित कर ले तो ऐसे व्यक्ति को अल्लाह तआ़ला नरक में प्रवेश करेगा।

(जामे तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 2866)

अधिक जामे तिरमिज़ी में हदीस पाक है, हज़रत शुफाई अस्बही रहमतुल्लाहि अलैह फरमाते हैं के मैं ने हज़रत अबु हुरैरह रज़ियल्लाहु तआला अन्हु कि सेवा में उपस्थित हो कर हदीस पाक वर्णन करे कि निवेदन की, जब आप ने हदीस पाक विवरण करना शुरु किया तो आप पर ऐसी स्थिति तारी हुई के आप सिसकियां लेते हुए बेहोश हो गए। जब आप होश आया हो फरमायाः-

मैं तुम्हें वह हदीस पाक विवरण करता हुँ जिसे मैं ने इस स्थान पर हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से सुनी है। आप पर फिर से अनोखी कैफियत तारी होती रह, जब होश में आए तो फरमायाः क़यामत के दिन 3 व्यक्ति को अल्लाह के दरबार में पेश किया जाएगाः-

(1)- वह व्यक्ति जिसे क़ुरान का ज्ञान दिया गया।

(2)- वह व्यक्ति जो खुदा कि राह में शहीद किया गया।

(3)- धनी व्यक्ति।

फिर अल्लाह तआ़ला क़ुरान के खारी से फरमाएगाः भाषांतरः कया मैं ने तुम्हें वह कलाम नहीं सिखाया जिसे मैं ने अपने रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर प्रकट किया। वह निवेदन करेगाः क्यों नहीं।

आदेश होगाः तुने अपने ज्ञान व विद्या के अनुसार कया कर्म कया? वह कहेगाः मैं दिन-रात इस कि तिलावत करता रहा। आदेश होगाः तूने झूठ कहा। फरिश्ते भी कहेंगेः तु झूठा है, अल्लाह तआ़ला आदेश फरमाएगाः तू चाहता था के यह कहा जाए "फला व्यक्ति खारी है" वह तो तुझे कह दिया गया।

धनी से कहा जाएगाः मैं ने तुझे संपन्नता व विपुलता नहीं दी थीं यहाँ तक के तुझे किसी का दरिद्र नहीं रखा। वह कहेगाः क्यों नहीं! आदेश होगाः

मेरे दान की हुई सम्पत्ति से तुने कया कर्म किए? कहेगाः मैं नातेदारों के दया व करुणा करता रहा, तथा सदखा करता रहा, अल्लाह तआ़ला आदेश फरमाएगाः तूने झूठ कहा है। फरिश्ते कहेंगे के तू झूठा है।

आदेश होगाः तू यह चाहता था के कहा जाए "फलां धनवान हैं" एवं वह तो कहा जा चुका है। फिर शहीद को लाया जाएगा पूछा जाएगा के तू किस लिए हत्या किया गया? वह कहेगाः तूने मुझे अपने मार्ग में जिहाद का आदेश दिया है।

इस लिए मैं ने जिहाद किया.। यहाँ तक के मैं शहीद हो गया। अल्लाह तआ़ला आदेश करेगाः तूने झूठ कहा है। फरिश्ते कहेंगे तूने झूठ कहा है। अल्लाह तआ़ला फरमाएगाः तेरी नियत यह थी के लोग कहें के "फलां बहुत वीर है" तथा यह बात कही जा चुकी है।

फिर सरकार पाक सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने आदेश फरमायाः अए अबु हुरैरह! अल्लाह के निर्माण में सब से प्रथम इन ही 3 व्यक्ति से नरक को भडकाया जाएगा।

(जामे तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 2557)

विद्यार्थी जो ज्ञान प्राप्त करने कि भावना रखते हैं। अपने समय को ज्ञान प्राप्त करने के लिए समर्पित करते हैं वह विशेष रूप से शिष्टाचार व स्वरूप के योग्य हों। हर गुण को प्राप्त करें तथा हर बुरे गुण व लक्षण कि आदत से दूर रहें।

छात्र को ज्ञान के गहनों से इस लिए नहीं संबोधित नहीं किया जाता के वह उच्च शैक्षिक उपाधि प्राप्त करें तथा लोग इन्हें शिक्षित व शिष्ट कहें, बल्कि

शिक्षा व संस्थान का लक्ष्य यह है के संसार कि वार्तालाप व कर्तव्य तथा ढंग को देख कर शिष्टाचार का प्रवचन प्राप्त करें।

वह अल्लाह के निर्माण के लिए शिष्टाचार का मार्ग में संग मेल बनें। इन के शिष्टाचार व सभ्यचार का स्तर सब के लिए कसौटी कि प्रतिष्ठा रखता हो।

लडकी कि शिक्षा – एवं इसलामी दृष्टिकोण

मानव जीवन केवल पुरुष के अस्तित्व से सम्पूर्ण नहीं जब तक के इस के साथ महिला शामिल ना हो। महिला समाज का का एक महत्व स्तम्भ है। सामाजिक, पारिवारिक, घरेलू, शिक्षाप्रद मसाइल महिला से संबंधित है।

यदि केवल पुरुष कि शिक्षा कि ओर ध्यान दिया जाए तथा इस मामले में महिला को उपेक्षा कर दिया जाए तो ना केवल महिला पर अत्याचार होगा बल्कि समाज का एक बडा संभाग अज्ञानता व अनभिज्ञता में व्यस्त, शिक्षा के प्राप्त करने से वंचित तथा शिक्षा के लक्ष्य से उपेक्षित हो जाएगा। इस लिए इसलाम ने महिला कि शिक्षा को भी अवश्य घोषित किया है।

समुदाय कि बेटियां धार्मिक शिक्षा तथा सांसारिक शिक्षा हर दो में भाग ले कर बाकिरदार महिला कि प्रतिष्ठा से समाज के अभ्यंतर व बहिर्भाग क्षेत्र का सुधराव कर सकती है।

महिलाओं कि सुरादरता करना, इन्हीं धार्मिक शिक्षित, सुधारता कि ज़िम्मेदारियों का अहसान दिलाना। बच्चों कि परवरिश का जागरूकता पैदा करना, इन्हीं शिक्षित, बुद्धिमान बनाना तथा शिष्टाचार के गुण से आभूषित करना अत्यन्त अनिवार्य है।

www.Ziaislamic.com

इस में महिलाएं के महत्व किरदार समापन कर सकती हैं हिजाब का सम्पूर्ण प्रबंध करते हुए तथा शरई सीमा में रह कर समाज सेवा भी परिणाम दे सकती है।

अर्थात सहीह बुखारी में हदीस पाक हैः-

भाषांतरः हज़रत रबीअ बिन्त मऊज़ रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से वर्णित है, वह कहती हैं के हम हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कि – में पानी पिलातें, जखमियों कि मरहम पट्टी करतें तथा शहीदों को मदीने कि ओर ले जातें।

(सहीह बुखारी, हदीस संख्याः 2882)

नबी करीम कि स्वर्णयुग में आदरणीय व सम्मानित सहाबियात ज़खमियों कि बीमारदारी करती थीं सैनिको में पानी पिलाती थीं तथा अनेक कर्म अंजाम दिया करती थीं।

संक्षेपः आदरकारी व विनीत बालिका एवं पवित्र महिलाएं हिजाब को अपनाते हुए सांसारिक विद्या भी प्राप्त करें तथा सामाजिक व पारिवारिक एवं प्रत्येक सम्भव क्षेत्र में अनिवार्य सेवा को अंजाम दें। तथा चिकित्सा (आयुर्विज्ञान) ज्ञान के श्रेत्र में महिलाओं व लडकियों कों अनुसंधान प्राप्त करें तथा इस की विशेषज्ञ (विशेष जानकार) बन जाएं।

छुट्टियों से लाभ उठाएं

मानव अपने जीवन में दैनिक कार्यरत के बावजूद कुछ फुरसत भी पाता है इन फुरसत के क्षण में उसे कोई ज़िम्मेदारी नहीं होती।

ऐसे समय मनुष्य चाहता है के उसे श्रेष्टतर से श्रेष्ट कार्य में बिताए कुछ सदस्य अपना समय व्यर्थ व निर्थक कार्यों में गुज़ारते हैं। अस्थायी रूप से शौक कि कामना एवं इच्चा कि संपादन होती हैं परन्तु इस के कारण से उन के स्वस्थ्य चिन्ता तथा तबीयत पर बुरा प्रभाव परिणाम होता है।

सिनेमा देखना, हंसी-मज़ाक के ये शिष्टाचार के अपराधी चलचित्र में या अपने बहुमूल्य समय बिताते हैं। एवं अपने लिए नुकसान भी मोल लेते हैं जो कार्य शरई रूप से निषिद्ध हैं उन कि क़यामत तो निश्चित हैं ग़ैर-निषिद्ध तथा ऐच्छिक खेल भी इस प्रकार केलना के कसरत व अनुकूलता व स्वस्थ्य कि सीमा से बढ जाए और मानव को उपेक्षा में व्यस्त कर दे एक विद्यार्थी को उस से भी सीमित व परीमित रहना चाहिए।

सरकार का आदेश हैः

भाषांतरः सर्वश्रेष्ट मुसलमान वह है जो मूर्ख कर्म छोड दे।

(जामे तिरमिज़ी, हदीस संख्याः 2487)

जिस समय शिक्षा प्राप्त की जा रही है इस विद्यार्थी के ज़माने में जो फुरसत व छुट्टियों के समय उपलब्ध आएं इन को सर्वोत्तम रूप से बिताने के लिए अपने आप को शिक्षाप्रद कार्यक्रम में व्यस्त रखा जाएं।

जैसे गरमी के छुट्टियों में सीमित अवधि इसलामी विद्याभ्यास कोर्स, कम्प्यूटर कोर्स, मौखिक (स्पोकन) अंग्रेजी कोर्स, स्पोकन अ़रबी कोर्स आदि। विद्यार्थी भविष्य में अपने निश्चित कार्यों से समाप्त हो कर जो पल फुरसत के पाय इन्हें श्रेष्ट रूप से गुज़ारें।

जैसे उचित तरीक़े से क़ुरान मजीद पढना, क़ुरान कि समझ तथा सामान्य जानकारी में समावेश व प्रगति करने वाले शिक्षित कार्यक्रम आदि से लाभ उठाएं।

अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है के किताब व हिकमत के विद्यार्थी हज़रत रसूल अल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के वास्ते से हमें लाभदायक ज्ञान कि सम्पत्ति से धनी बनाएं एवं जो कुछ हम ने सीखा है इस के अनुसार कर्म करने कि मार्गदर्शन दान फरमाए।

आमीन

www.Ziaislamic.com